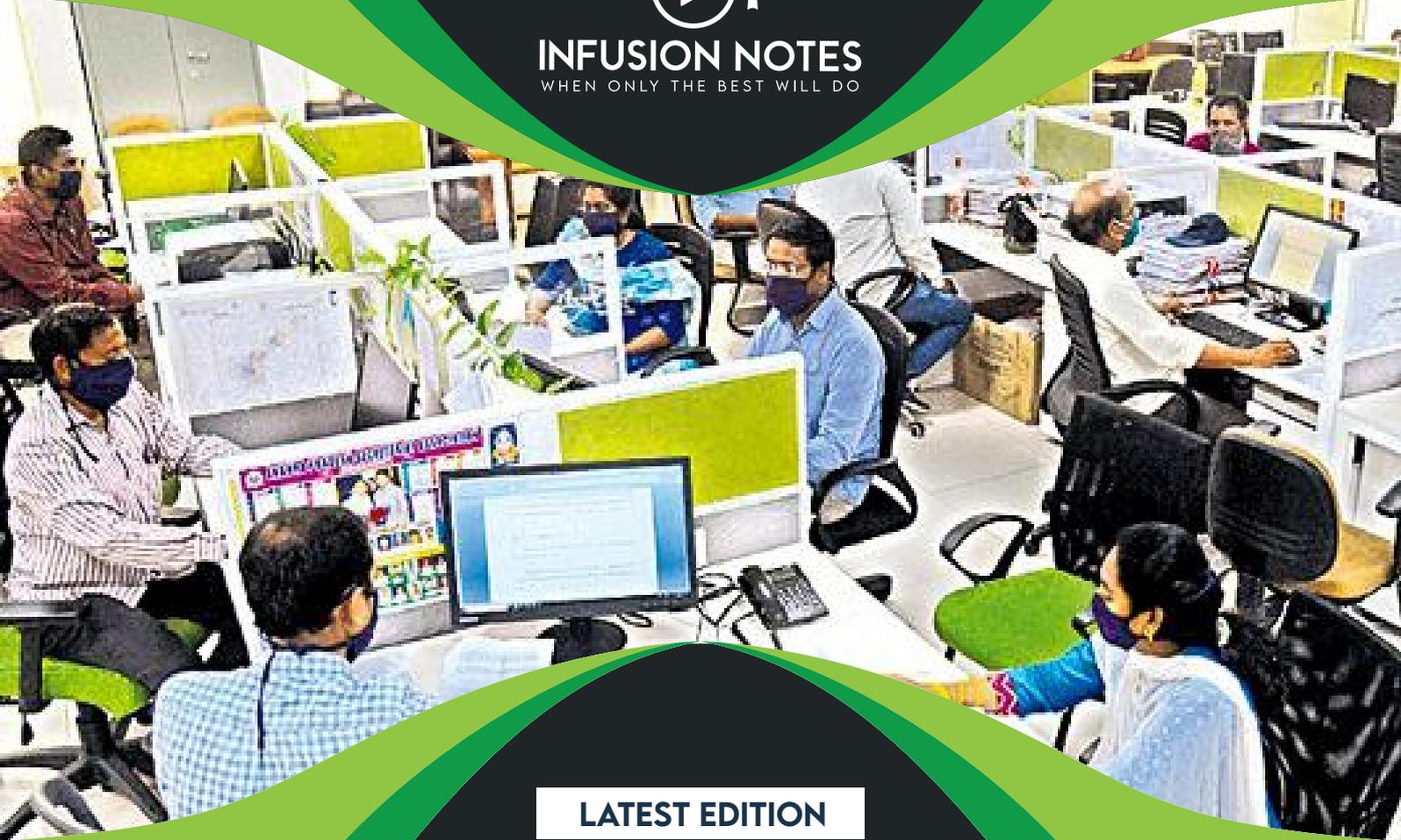




INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



LATEST EDITION

RSMSSB LDC

लिपिक ग्रेड - II, एवं कनिष्ठ सहायक

HANDWRITTEN NOTES

[भाग - 3] भारत एवं राजस्थान का भूगोल +
अर्थव्यवस्था + पंचायती राज



RSMSSB LDC

**लिपिक ग्रेड - II, एवं
कनिष्ठ सहायक**

भाग - 3

**भारत एवं राजस्थान का भूगोल + अर्थव्यवस्था +
पंचायती राज**

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक) को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Whatsapp Link - <https://wa.link/kxkr5q>

Online Order Link - <https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

1. स्थिति एवं विस्तार	1
2. जल संसाधन	13
3. जलवायु	19
4. कृषि एवं उद्योग	23
5. भारत के महत्वपूर्ण उद्योग	32
6. पारिस्थितिकी एवं वन्य जीव	37
7. वन्य प्राणी एवं संरक्षण	59

राजस्थान का भूगोल

1. स्थिति एवं विस्तार	66
2. राजस्थान के भौतिक विभाग	79
3. नदियाँ एवं झीलें	90
4. जलवायु	108
5. राजस्थान की वनस्पति, वन्य जीव प्राणी	110

6. राजस्थान की कृषि	121
7. पशुधन	133
8. जनसंख्या एवं प्रमुख जनजातियाँ	137
9. राजस्थान में प्रमुख उद्योग	154
10. राजस्थान की विभिन्न योजनायें	158
11. राजस्थान के पर्यटन स्थल	162
12. ऊर्जा संसाधन	169
13. पंचायती राज	180
14. राजस्थान में औद्योगिक विकास एवं बजट	190
15. राजस्थान में प्रमुख खनिज	227

भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

अध्याय - 1

स्थिति एवं विस्तार

भारत की स्थिति व सीमाओं से सम्बंधित महत्वपूर्ण बिंदु -

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में हिन्द महासागर के शीर्ष पर तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवा स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा प में पाकिस्तान एवं अरब सागर है। भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरू मध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत का दक्षिणतम बिन्दु-कन्याकुमारी है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (गेटनिकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल है।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु

- दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (गेटनिकोबार द्वीप)
- उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (जम्मू-कश्मीर)
- पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात)
- पूर्वी बिन्दु-वालांगू (अरुणाचल प्रदेश)
- मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य

पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, प बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, प बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	प बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचलप्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत-बांग्लादेश सीमा	4098 किमी.
भारत-चीन	3239किमी.
भारत-पाक सीमा	3310 किमी.
भारत-नेपाल सीमा	1761 किमी.
भारत- म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत-भूटान सीमा	587 किमी.

भौतिक विशेषताएं

- कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचो - बीच से गुजरती है।
- भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है।
 - उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
 - उत्तर का विशाल मैदान
 - दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
 - समुद्र तटीय मैदान
 - थार का मरुस्थल
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा 7516.6 किमी. लम्बी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है।

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य	
राज्य	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
राजस्थान	3422239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
आन्ध्र प्रदेश	275069
उत्तर प्रदेश	240928

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले	
जिला	क्षेत्रफल वर्ग किमी.
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

- जनसंख्या की दृष्टि से सिक्किम भारत का सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा पठारी राज्य है।
- राजस्थान भारत का सबसे बड़ा मरुस्थलीय राज्य है।
- मध्य प्रदेश में वन (जंगल) सबसे अधिक है।
- भारत में द्वीपों की कुल संख्या 248 है बंगाल की खाड़ी में 223 तथा अरब सागर में 25 द्वीप हैं।
- भारत के सबसे दक्षिणी छोर का नाम इन्दिरा प्वाइंट है और यह बंगाल की खाड़ी में ग्रेट निकोबार (Great Nicobar) द्वीप पर स्थित है।

अध्याय - 2

जल संसाधन

• नदियाँ

भारत नदियों का देश है। भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही हैं।

भारत में 4000 से भी अधिक छोटी बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहद् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं। कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजला (Drainage Network) कहते हैं।

निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता है।

भारतीय अपवाह तंत्र



अपवाह तंत्र

यदापि इस विभाजन योजना में चंबल, बेतवा, सोन आदि नदियों के वर्गीकरण में समस्या उत्पन्न होती है। क्योंकि उत्पत्ति व आयु में ये हिमालय से निकलने वाली नदियों से पुरानी हैं। फिर भी यह अपवाह तंत्र के वर्गीकरण का सर्वमान्य आधार है।

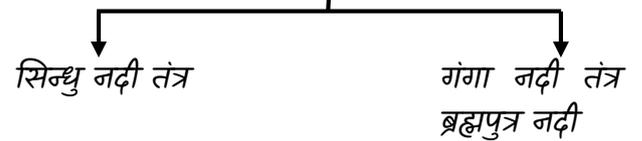
हिमालयी अपवाह तंत्र

उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व है। ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं। उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं। इन्हीं नदियों

द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।

इस क्षेत्र की नदियाँ बारहमासी Perennial हैं क्योंकि ये वर्षण एवं बर्फ पिघलने दोनों क्रियाओं से जल प्राप्त करती हैं। ये नदियाँ गहरे महाखण्डों से गुजरती हैं। जो हिमालय के उत्थान के साथ-साथ होने वाली अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित हैं।

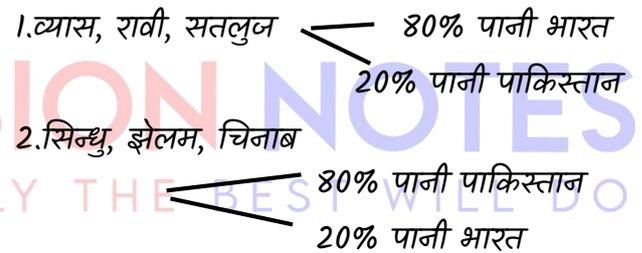
हिमालयी अपवाह तंत्र की नदियाँ



1. सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जब संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -



सिंधु नदी तंत्र

यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km है। भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी है।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लंबाई केवल 1,114 km है। भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे प नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक हिमनद से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित है। तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं।
- सिन्धु, सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी तंत्र की प्रमुख नदियाँ हैं। अन्य

सहायक नदियाँ - श्योक, गिलांगित, जास्कर, हुंजा, नुब्रा, शिगार, गार्विंग व द्रास ।

- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है । जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है ।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है । पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है ।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार है । तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, हंग-हो, पीत, पीली नदी इरावदी, मेकांग एवं सतलज ।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता है । यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है। तथा कठोर चट्टानी भागों से होकर बहती है । यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती है ।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ :-

1. सतलज नदी
2. व्यास नदी
3. रावी नदी
4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राकस ताल झील से निकलती है । जहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है ।
- यह उत्तर - प दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकील दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है ।
- सतलज, सिन्धु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदी है । यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती है ।
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती है ।

व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदी है । रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती है ।
- यह नदी कुल्ली घाटी से गुजरती है । तथा धौलाधर श्रेणी में काटी और लारजी में महाखण्ड का निर्माण करती है ।

रावी नदी (परुष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्वपूर्ण सहायक नदी है जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के प से निकलती है तथा चंबा घाटी से होकर बहती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है । जो चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती है ये सरितायें हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांडी में आपस में मिलती है ।
- इसलिये इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है । पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1180 किमी है ।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी है , जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखड्ड से गुजरती है ।

गंगा नदी तंत्र

गंगा नदी

- गंगा नदी का उद्गम उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ है। जहाँ यह भागीरथी के नाम से जानी जाती है।
- गंगा नदी की ल. 2525km (उत्तराखंड) में 110 km. उ०प्र० में 1450 km. तथा बिहार में 445 km व प बंगाल में 520 km) है।

नोट - प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1 st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें -

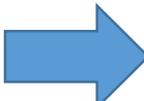
RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s>

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें 	https://wa.link/kxkr5q

- 0 खेल का सामान- जालंधर, सहरनपुर, मेरठ, ग्वालियर एवं कोलकाता।
- 0 चूड़ी उद्योग- फिरोजाबाद, शिकोहाबाद एवं मुरादाबाद
- 0 हीरा तरासना- जयपुर. सूरत एवं मुम्बई।

अध्याय - 6

पारिस्थितिकी एवं वन्य जीव

पारिस्थितिकी विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत जीव- विज्ञान तथा भूगोल के मौलिक सिद्धांत की पारस्परिक व्याख्या की जाती है अर्थात् किसी कालखण्ड विशेष में, किसी स्थान पर जीवों का उसके पर्यावरण के साथ पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन पारिस्थितिकी कहा जाता है।

Ecology लैटिन भाषा के 2 शब्दों से मिलकर बना हुआ - OIKOS और LOGOS जहाँ OIKOS से आशय है निवास स्थान जबकि LOGOS अध्ययन शब्द को प्रतिबिम्बित करता है अर्थात् किसी जीव के निवास स्थान या आवास के अध्ययन को पारिस्थितिकी कहा जाता है।

इकोलॉजी शब्द के जन्मदाता राइटर हैं, जबकि इस शब्द की सैद्धान्तिक व्याख्या अर्नेस्ट हैकल ने प्रस्तुत की थी इसलिए पारिस्थितिक विज्ञान या जन्मदाता हैकल को ही समझा जाता है।

Level of ecological study [पारिस्थितिक विज्ञान अध्ययन के विभिन्न स्तर]

1. जनसंख्या (Population)
2. समुदाय (Community)
3. पारितन्त्र (Eco-System)
4. बायोम (बायोम)
5. जैवमण्डल (Bio-sphere)

1. जनसंख्या :- किसी निश्चित कालखण्ड में स्थान विशेष पर समान प्रजाति में पाये जाने वाले जीवों की कुल संख्या को पारिस्थितिक जनसंख्या कहते हैं। यहाँ प्रजाति से आशय है वह जैव-समूह जिसमें स्वस्पगत , आनुवांशिक भिन्नता हो तथा सफल लैंगिक एवं अलैंगिक प्रजनन पाया जाता है। जनसंख्या पारिस्थितिकी के अध्ययन की सबसे छोटी इकाई है।

2. समुदाय- समुदाय निर्धारित स्थान - विशेष में जीवों का वैसे समूह है जो की एक-दूसरे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अंतर्सम्बन्धित होते हैं। अर्थात् समुदाय की आवश्यक शर्त है की इसमें विभिन्न

प्रजातियाँ पारिस्थितिक ऊर्जा के लिए एक-दूसरे पर आश्रित होती हैं।

3. पारिस्थितिक तन्त्र - पारिस्थितिकी तन्त्र पारिस्थितिकी विज्ञान के अन्तर्गत सूक्ष्म से लेकर वृहद क्रियात्मक इकाई है जिसमें जैविक एवं अजैविक घटकों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों से उत्पन्न ऊर्जा प्रवाह का अध्ययन किया जाता है।

पारिस्थिति तन्त्र शब्द के जन्मदाता आर्थर टान्सले हैं परन्तु इसकी सैधान्तिक व्याख्या E.P. Odum ने अपनी पुस्तक Fundamental of Ecology में की है इसलिए Father of Ecosystem Odum महोदय को कहा जाता है।

Types of EcSo-system - क्रियात्मकता के आधार पर पारितन्त्र 2 प्रकार के होते हैं-

1. प्राकृतिक पारितन्त्र 2. कृत्रिम पारितन्त्र

1. प्राकृतिक पारितन्त्र- पारितन्त्र का वह अंग है जिसमें मानवीय हस्तक्षेप नहीं होता इसके 2 महत्वपूर्ण अंग हैं-

(अ) स्थलिय पारितन्त्र, घासभूमि पारितन्त्र, मरुभूमि पारितन्त्र आदि ।

(ब) जलीय पारितन्त्र- जलीय पारितन्त्र स्वभावतः 2 प्रकार का होता है :-

(1) प्रवाही जल का पारितन्त्र

(2) स्थायी जल का पारितन्त्र

स्थायी जल का पारितन्त्र विभिन्न प्राकृतिक पारितन्त्र में सर्वाधिक स्थिर पाया जाता है। सागरिय पारितन्त्र जलीय पारितन्त्रों में सर्वाधिक स्थिर है।

2 कृत्रिम पारितन्त्र- पारितन्त्र का वह अंग जोकि मानव द्वारा अपनी आवश्यकताओं के अनिर्भर निर्मित किया जाता है उसे कृत्रिम पारितन्त्र कहते हैं जैसे - कृषि भूमि का पारितन्त्र।

पारितन्त्र के घटक- क्रियात्मक पारितन्त्र में मुख्य रूप से 2 प्रकार के घटक पाये जाते हैं जाकि एक-दूसरे से ऊर्जा प्रवाह द्वारा जुड़े होते हैं।

(1) अजैविक घटक- पारितन्त्र के अजैविक घटक तीन वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं-

(1) कार्बनिक घटक- कार्बनिक घटकों का निर्माण पारितन्त्र में विभिन्न जैव- रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा

होता है इसलिए इन्हे रासायनिक घटकों के नाम से भी जानते हैं जैसे- कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, वसा आदि।

(2) भौतिक घटक- इन्हे जलवायुविक घटकों की श्रेणी में रखते हैं जैसे :- तापमान, आर्द्रता, वायुमंडलीय दाब, पवन परिसंचरण आदि के साथ - साथ ऊंचाई ।

(3) खनिज घटक- अजैविक घटकों में पारितन्त्र में खनिजों का महत्वपूर्ण योगदान है जो कि विभिन्न पोषण स्तरों में चक्रीय प्रवाह के रूप में प्राप्त होते हैं। जैसे- कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, P, Fe, Cu, O₂ आदि।

(2) जैविक स्वपोषि- वह जैव समुदाय जो कि भौतिक तत्वों से अपने लिए स्वयं भोज्य ऊर्जा उत्पन्न करता है उन्हे स्वपोषि कहा जाता है। इनके 2 महत्वपूर्ण वर्ग हैं-

1. प्रकाश संश्लेषित जीव- जो कि सूर्य से प्राप्त ऊर्जा द्वारा अपना भोजन निर्मित करता है इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से पादप समूह आते हैं।

2. रासायनिक संश्लेषित जीव- वह सूक्ष्म जीव जो कि सूर्य प्रकाश की अनुपस्थिति में जैव- रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन निर्माण करते हैं।

परपोषी- वह जैव समूह जो कि अपने भोज्य ऊर्जा हेतु स्वपोषियों पर निर्भर करता है उसे परपोषी जैव समूह कहते हैं इसे 2 वर्गों में रखा जाता है-(1) Macro (2) Micro

पारिस्थितिकी के कार्य

(1) पारितन्त्र में ऊर्जा का प्रवाह विभिन्न पोषण स्तरों में हमेशा एकदिशीय होता है-

(2) पारितन्त्र कर सन्तुलन ऊर्जा प्रवाह पर ही निर्भर करता है।

(3) एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में स्थानान्तरित होती हुई ऊर्जा के अधिकांश मात्रा का ह्यस हो जाता है परन्तु ऊर्जा विनिष्ट नहीं होती।

(4) लिण्डमैन के अनुसार प्रत्येक पोषण स्तर में ऊर्जा का स्थानान्तरण केवल 10% होता है इसे लिण्डमैन के 10% का नियम कहा जाता है।

(5) पारितन्त्र में स्थानान्तरित ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण के नियम का पालन करती है अर्थात् ऊर्जा न तो

- वायुमण्डल के गैसीय संयोजन में परिवर्तन का सिद्धान्त वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रिक ऑक्साइड, मीथेन, जलवाष्प आदि की मात्रा में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात्, जबसे पेट्रोलियम, कोयले तथा प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल बढ़ा है तबसे वायुमण्डल की गैसों की संरचना में तेजी से परिवर्तन हो रहा है।
- जलवायु परिवर्तन के बारे में कार्बन डाइऑक्साइड सिद्धान्त टी.सी. चैम्बरलिन ने प्रस्तुत किया था।
- महाद्वीपीय विस्थापन का सिद्धान्त महाद्वीपीय विस्थापन से सम्बद्ध विभिन्न सिद्धान्तों; जैसे-वेगनर का महाद्वीपीय सिद्धान्त, हैजिल हैस का सागर तल विस्तारण सिद्धान्त एवं मॉर्गन का प्लेट विवर्तनिक सिद्धान्त आदि के अनुसार 30 करोड़ वर्ष पूर्व शुरू हुई महाद्वीपों में विस्थापन की प्रक्रिया निरन्तर जारी है। इस प्रक्रिया के कारण भी जलवायु में परिवर्तन होता रहता है।

वन विनाश

वन भू-तल के लिए प्राकृतिक छतरी का निर्माण करते हैं, क्योंकि ये मानव द्वारा उत्सर्जित गैसों को सोखकर वायुमण्डल के हरितगृह प्रभाव को कम करते हैं। वस्तुतः वन अपनी वृद्धि के लिए CO_2 का उपयोग करते हैं। अतः वनों के विनाश से CO_2 की मात्रा में वृद्धि हो रही है। 2 इसके अतिरिक्त अतिचारण (Overgrazing) तथा स्थानांतरित / झूमिंग कृषि से भी वनों का विनाश हो रहा है, जिससे वैश्विक तापन में वृद्धि हुई है।

जीवाश्म ईंधन

कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन डाइ ऑक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन जीवाश्म ईंधन के व्यापक प्रयोग से बढ़ा है, जो जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार मानवजनित कारण है। जीवाश्म (Fossil) आधारित ईंधन के प्रयोग से वायु एवं जल प्रदूषण के अलावा ग्रीनहाउस गैसों का संचयन भी बढ़ा है।

वर्तमान कृषि पद्धति

जलवायु परिवर्तन में मानव द्वारा अपनाई जाने वाली वर्तमान कृषि पद्धति भी बहुत हद तक जिम्मेदार है। जलमग्न चावल के खेत की जुताई से मीथेन का उत्सर्जन होता है, जो ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करती है। जुगाली करने वाले पशु भी मीथेन का उत्सर्जन करते हैं। प्रति इकाई द्रव्यमान के आधार पर वायुमण्डलीय मीथेन दीर्घ आवेशित विकिरणों

(Charged Radiation) को अवशोषित (Absorption) करने में CO_2 के मुकाबले 22 गुना अधिक प्रभावी है।

औद्योगीकरण तथा शहरीकरण

जलवायु परिवर्तन के लिए औद्योगीकरण तथा शहरीकरण में उत्तरोत्तर वृद्धि मानवजनित (Man-made Reason) प्रमुख कारणों में से एक है। प्रकृति का अन्धाधुन्ध दोहन कर मानव औद्योगीकरण तथा शहरीकरण में वृद्धि कर रहा है, जो व्यापक रूप से जलवायु को प्रभावित करता है।

2. वैश्विक तापन

ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ते सान्द्रण के कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। वैसे तो वैश्विक तापन औद्योगिकीकरण के साथ ही शुरू हो चुका था, लेकिन इसकी तापने दर में उतार-चढ़ाव आता रहा है।

ग्रीनहाउस प्रभाव

- ग्रीनहाउस प्रभाव से तात्पर्य है कि पृथ्वी पर जितनी मात्रा में सूर्यातप की प्राप्ति होती है उतनी ही मात्रा में सौर्यिक ऊर्जा (Solar Energy) का पृथ्वी से उत्सर्जन नहीं हो पाता है, जिस कारण पृथ्वी का ताप बढ़ने लगता है। 1896 ई. में स्वांते अरहेनियस ने ग्रीनहाउस प्रभाव (Greenhouse Effect) शब्द का प्रयोग किया, जो गैसे ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करने के लिए जिम्मेदार होती है, उन्हें ग्रीनहाउस गैसों कहते हैं। कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC) एवं हाइड्रो क्लोरोफ्लोरोकार्बन (HCFC) प्रमुख ग्रीनहाउस गैसों हैं।
- ग्रीनहाउस गैसों पृथ्वी पर आने वाले लघुतरंगीय सौर विकिरण (Short Wave Solar Radiation) के लिए पारदर्शी होती हैं, लेकिन पृथ्वी से जाने वाले दीर्घ तरंगीय सौर विकिरण (Long Wave Solar Radiation) के लिए अपारदर्शी होती हैं।
- वायुमण्डल में ग्रीनहाउस गैसों में सर्वाधिक सान्द्रण कार्बन डाइऑक्साइड CO_2 का है। कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन मुख्यतः जीवाश्मी ईंधनों (Fossil Fuels); जैसे-तेल, गैस, कोयला के जलने से होता है। वन और महासागर CO_2 के कुण्ड होते हैं।

● पर्यावरणीय रणनीतियाँ

भारतीय संविधान को 1950 में लागू किया गया लेकिन यह संविधान सीधे तौर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रावधानों से नहीं जुड़ा था। इसलिए सन् 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन ने भारत सरकार का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर दिया। सरकार ने 1976 में संविधान में संशोधन कर दो महत्वपूर्ण अनुच्छेद 48 ए तथा 51 ए (जी) जोड़े। अनुच्छेद 48 ए राज्य सरकार को निर्देश देता है कि वह 'पर्यावरण की सुरक्षा और उसमें सुधार सुनिश्चित करे, तथा देश के वनों तथा वन्यजीवन की रक्षा करे'। अनुच्छेद 51 ए (जी) नागरिकों को कर्तव्य प्रदान करता है कि वे 'प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करे तथा उसका संवर्धन करे और सभी जीवधारियों के प्रति दयालु रहे'।

पर्यावरण की गुणवत्ता की इस कमी में प्रभावी नियंत्रण व प्रदूषण के परिप्रेक्ष्य में सरकार ने समय-समय पर अनेक कानून व नियम बनाए।

पर्यावरणीय कानून व नियम निम्नलिखित हैं

- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
- जल प्रदूषण संबंधी-कानून
- रीवर बोर्डर्स एक्ट, 1956
- जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974
- जल उपकर (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1977
- वायु प्रदूषण संबंधी कानून
- फैक्ट्रीज एक्ट, 1948
- इनफ्लेमेबल्स सबस्ट्रैट्स एक्ट, 1952
- वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981
- भूमि प्रदूषण संबंधी कानून
- फैक्ट्रीज एक्ट, 1948
- इण्डस्ट्रीज (डैवलपमेंट एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 1951

- इनसेक्टीसाइड्स एक्ट, 1968
 - अर्बन लैंड (सीलिंग एण्ड रेगुलेशन) एक्ट, 1976
 - वन तथा वन्यजीव संबंधी कानून
 - फोरेस्ट्स कंजर्वेशन एक्ट, 1960
 - वाइल्ड लाईफ प्रोटेक्शन एक्ट, 1972
 - फोरेस्ट (कनजर्वेशन) एक्ट, 1980
 - वाइल्ड लाईफ (प्रोटेक्शन) एक्ट, 1995
 - जैव-विविधता अधिनियम, 2002
- कुछ महत्वपूर्ण कानून एवं उनका विश्लेषण

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986

संयुक्त राष्ट्र का प्रथम मानव पर्यावरण सम्मेलन 5 जून, 1972 में स्टॉकहोम में संपन्न हुआ। इसी से प्रभावित होकर भारत ने पर्यावरण के संरक्षण लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 पास किया। यह एक विशाल अधिनियम है जो पर्यावरण के समस्त विषयों के ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वातावरण में घातक रसायनों की अधिकता को नियंत्रित करना व पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषण मुक्त रखने का प्रयत्न करना है। इस अधिनियम में 26 धाराएं हैं जिनमें 4 अध्यायों में बाँटा गया है। यह कानून पूरे देश में 19 नवम्बर, 1986 से लागू किया गया। अधिनियम की पृष्ठभूमि व उद्देश्यों के अंतर्गत शामिल बिन्दुओं के आधार पर सारांश में अधिनियम के निम्न उद्देश्यों हैं:

- पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार करना
 - मानव पर्यावरण के स्टॉकहोम सम्मेलन के नियमों को कार्यान्वित करना
 - मानव, प्राणियों, जीवों, पादपों को संकट से बचाना
 - पर्यावरण संरक्षण हेतु सामान्य एवं व्यापक विधि निर्मित करना
 - विद्यमान कानूनों के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण प्रधिकरणों का गठन करना तथा उनके क्रियाकलापों के बीच समन्वय करना
- मानवीय पर्यावरण सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था करना। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) एक व्यापक

अध्याय - 7

वन्य प्राणी एवं संरक्षण

राष्ट्रीय उद्यान

भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान जिम कार्बेट नैनीताल (उत्तराखंड) है इसका पुराना नाम हेली नेशनल पार्क था जिसकी स्थापना 1935 की गयी थी।

- देश में सर्वाधिक राष्ट्रीय उद्यान मध्यप्रदेश में है।
 - भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान जम्मू कश्मीर के लेह जनपद में है इसका नाम हिमिस है।
 - जिम कार्बेट पार्क से रामगंगा नदी बहती है।
 - भारत का सबसे बड़ा बाघ अभ्यारण्य नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) है।
 - भारतीय पक्षी विज्ञानी और प्रकृतिवादी सलीम अली को बर्डमैन ऑफ इंडिया कहा जाता है सलीम अली राष्ट्रीय पक्षी उद्यान जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में है।
 - डाचीगाम सैंक्युरी एकमात्र सैंक्युरी है जहां कश्मीरी महामृग पाया जाता है
 - भारत प्राणी-विज्ञान सर्वेक्षण की स्थापना 1916 ई., की गई थी और इसका मुख्यालय कोलकाता में है।
 - भारत वानस्पतिक सर्वेक्षण विभाग की स्थापना 1970 ई की गई थी और इसका कोलकाता में कहां है।
 - अंडमान-निकोबार द्वीप समूह राज्य/केंद्रशासित प्रदेश में सबसे ज्यादा वन्य जीव अभ्यारण्य है।
 - मध्य प्रदेश में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध है।
 - उत्तराखण्ड के नंदा देवी के शिखर पर स्थित नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान पार्क 1982 में राष्ट्रीय उद्यान बना। इस क्षेत्र के अंतर्गत फूलों की घाटी है, जहाँ किस्म-किस्म के फूलों की छटा बिखरी हुई है।
 - दुधवा राष्ट्रीय उद्यान(उत्तर प्रदेश) नेपाल से अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाता है। इसे 1977 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।
- यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल मानस अभ्यारण्य (असम) राष्ट्रीय उद्यान देश का चर्चित टाइगर और एलीएंट रिजर्व भी है। इसका नाम मानस उद्यान के पश्चिम से बहने वाली मानस नदी

के नाम से पड़ा है। एक सींग का गंडा अतिरिक्त यहाँ कई अन्य दुर्लभ जीव-जंतु भी पाए जाते हैं।

भारत के वन्य जीव अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान - India Wildlife Sanctuary and National Park

वन्य जीवों की विलुप्त होती संख्या को देखते हुए उनके संरक्षण के लिए भारत सरकार (Indian government) ने अनेकों वन्य जीव अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान (Wildlife Sanctuary and National Park) बनाये हैं भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान सन 1936 में बनाया गया था जिसका नाम हेली नेशनल पार्क (Hailey National Park) था जिसे अब जिम कोर्बेट राष्ट्रीय उद्यान (Jim Corbett National Park) के नाम से जाना जाता है

1. **अरुणाचल प्रदेश (Arunachal Pradesh)**
 - नामदफा राष्ट्रीय पार्क (Namdfa National Park)
2. **हरियाणा (Haryana)**
 - सुल्तानपुर राष्ट्रीय पार्क (Sultanpur National Park)
 - कलेसर राष्ट्रीय पार्क (Kalesar National Park)
3. **उत्तर प्रदेश (Uttar Pradesh)**
 - दुधवा राष्ट्रीय पार्क (Dudhwa National Park)
 - चन्द्रप्रभा वन्यजीव विहार (Chandraprabha wildlife sanctuary)
4. **झारखंड (Jharkhand)**
 - बेतला राष्ट्रीय पार्क (Betla National Park)
 - हजारीबाग राष्ट्रीय पार्क (Hazariabagh National Park)
 - दलमा अभ्यारण्य (Dalma Wildlife Sanctuary)
5. **मणिपुर (Manipur)**
 - कैबुल लामजाओ राष्ट्रीय पार्क (Keibul Lamjao National Park)
 - सिरोई राष्ट्रीय उद्यान (Sirohi National Park)
 - येंगंगपोक्पी लोकचाओ वन्यजीव अभ्यारण्य (Yangangpokpi Lokchao Wildlife Sanctuary)

क्र.सं.	राष्ट्रीय उद्यान/अभ्यारण्य	राज्य	प्रमुख वन्यजीव प्राणी
37	बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	मध्य प्रदेश	बाघ, तेंदुआ, सांभर, भालू, चकोर
38	राजीव गांधी अभ्यारण्य (नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान)	कर्नाटक	चीता, हाथी, तेंदुआ, सांभर, भालू, चकोर, तीतर,
39	पखुई वन्य जीवन अभ्यारण्य	अरुणाचल प्रदेश	हाथी, अजगर, हिरण, सांभर
40	सुल्तानपुर झील अभ्यारण्य	हरियाणा	विभिन्न जल पक्षी
41	रोहिला राष्ट्रीय उद्यान	हिमाचल प्रदेश	कस्तूरी हिरण, भूरा भालू, पहाड़ी मुर्गा, पहाड़ी तेंदुआ
42	सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान	पश्चिम बंगाल	बाघ, चीता, हिरण, मगरमच्छ
43	भगवान् महावीर उद्यान	गोवा	हिरण, चूहा, साही, सांभर
44	नौगरवाइलेम अभ्यारण्य	मेघालय	हाथी, चीता, बाघ, हिरण, सांभर, भालू
45	कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान	मणिपुर	हिरण, जंगली बकरी, विभिन्न जल पक्षी
46	राजाजी राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखंड	हाथी, हिरण, चीते, सांभर और मोर
47	ओरंग टाइगर रिजर्व	असम	बाघ
48	दिबांग वन्यजीव अभ्यारण्य	अरुणाचल प्रदेश	बाघ

- पेरियार अभ्यारण्य जंगली हाथियों के लिए प्रसिद्ध हैं ।
- एक सींग वाला गेंडा असम व पश्चिम बंगाल पाया जाता है ।
- भारतीय गेंडे काजीरंगा अभ्यारण्य में सबसे ज्यादा पाये जाते हैं ।
- विश्व वन्य जीव कोष का प्रतीक पांडा है ।
- शेर परियोजना 1972 ई. शुरू की गई ।
- बाघ परियोजना 1973 ई. शुरू की गई ।
- घड़ियाल परियोजना 1974 ई. शुरू की गई ।
- गेंडा परियोजना 1987 ई. शुरू की गई ।
- हिमचीता परियोजना 1987 ई. शुरू की गई ।
- मगर प्रजनन परियोजना 1975 ई. शुरू की गई ।

नोट - प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1 st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें -

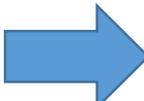
RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s>

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

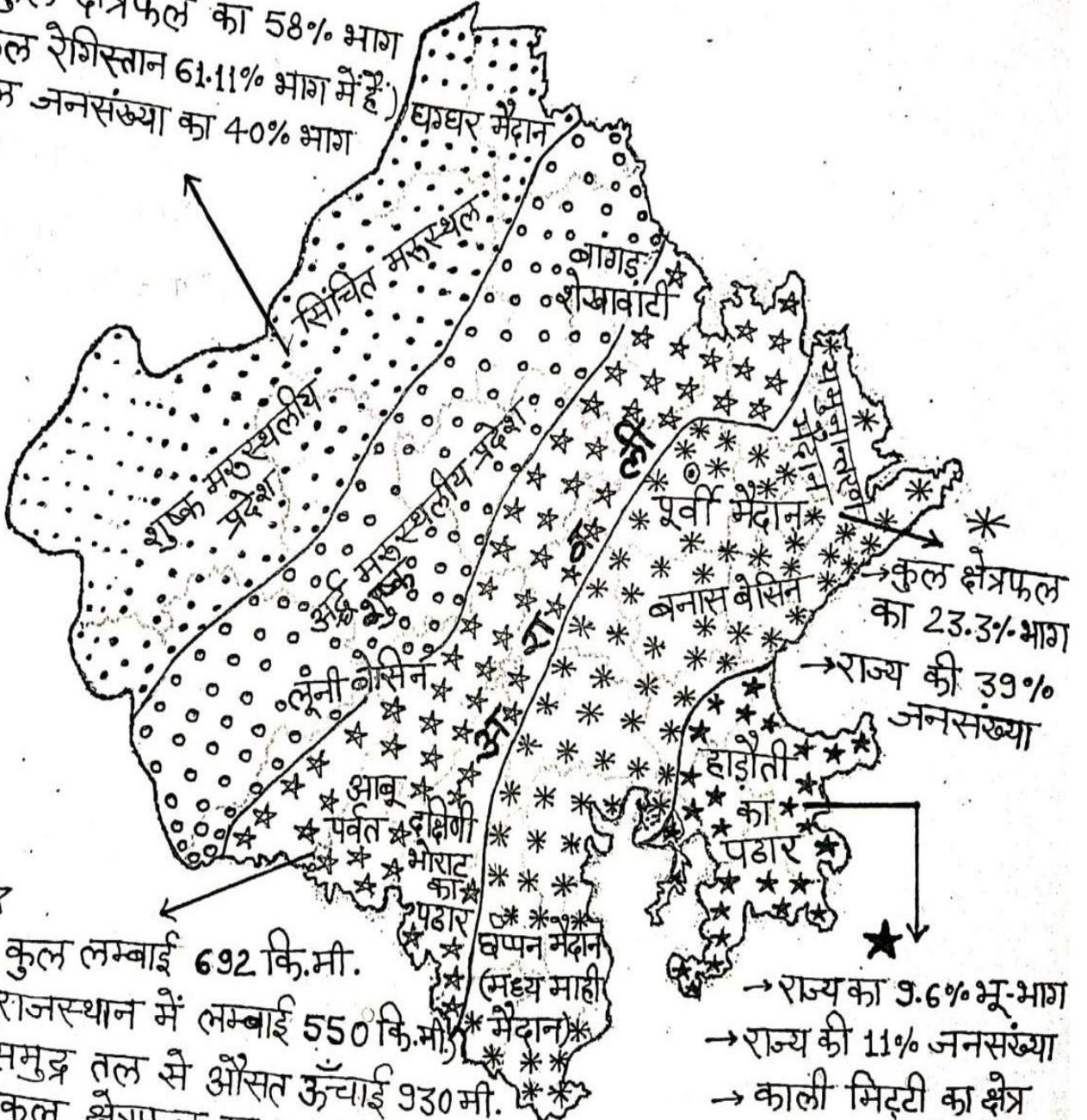
ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें 	https://wa.link/kxkr5q

अध्याय - 2

राजस्थान के भौतिक विभाग

••

- कुल क्षेत्रफल का 58% भाग
- (कुल रेगिस्तान 61.11% भाग में है)
- कुल जनसंख्या का 40% भाग



- कुल लम्बाई 692 कि.मी.
- (राजस्थान में लम्बाई 550 कि.मी.)
- समुद्र तल से औसत ऊंचाई 930 मी.
- कुल क्षेत्रफल का 9% भाग
- कुल जनसंख्या का 10% भाग

- राज्य का 9.6% भू-भाग
- राज्य की 11% जनसंख्या
- काली मिट्टी का क्षेत्र

नोट:- प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग-अलग क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इन की वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता है
2. अरावली पर्वतमाला- वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश दोमट व जलोढ मिट्टी पाई जाती है
4. दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में काली मिट्टी पाई जाती है। इस क्षेत्र को हाड़ोती का पठार भी कहते हैं।

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

1. **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश:-** जैसा कि पहले ही अवगत कराया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय-
वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोट:-पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी - फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित हैं, उनमें से 12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार है। यह जिले निम्न प्रकार हैं-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर
2. जौंधपुर संभाग - जौंधपुर , जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग - नागौर

नोट:- राज्य के सिरोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित 13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

थार का रेगिस्तान राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है। यह उत्तर - पश्चिम में 644 किमी. लम्बा और 360 किमी चौड़ा है। इस का सामान्य ढाल उत्तर - पूर्व से दक्षिण -पश्चिम की ओर है। मरुस्थल का ऊँचा उठा हुआ उत्तर-पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली' कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल है तथा इसके अलावा यह विश्व में जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं कि यह विश्व का एक मात्र ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान है। थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है। ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है जो दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। ये हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यन्त विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49°C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

आंकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तल छट वाली ग्रेनाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि थार का मरुस्थल 'पर्मा का बॉनिफेरस युग' में टेथिस सागर का हिस्सा था।

थार का मरुस्थल 'पेकियो आर्कटिक अफ्रीका' मरुस्थल का ही पूर्वी भाग है।

थार के मरुस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरुउद्यान

काली खोह पर्वतश्रृंखला - जयपुर से आगरा तक
विस्तृत पहाड़ियां

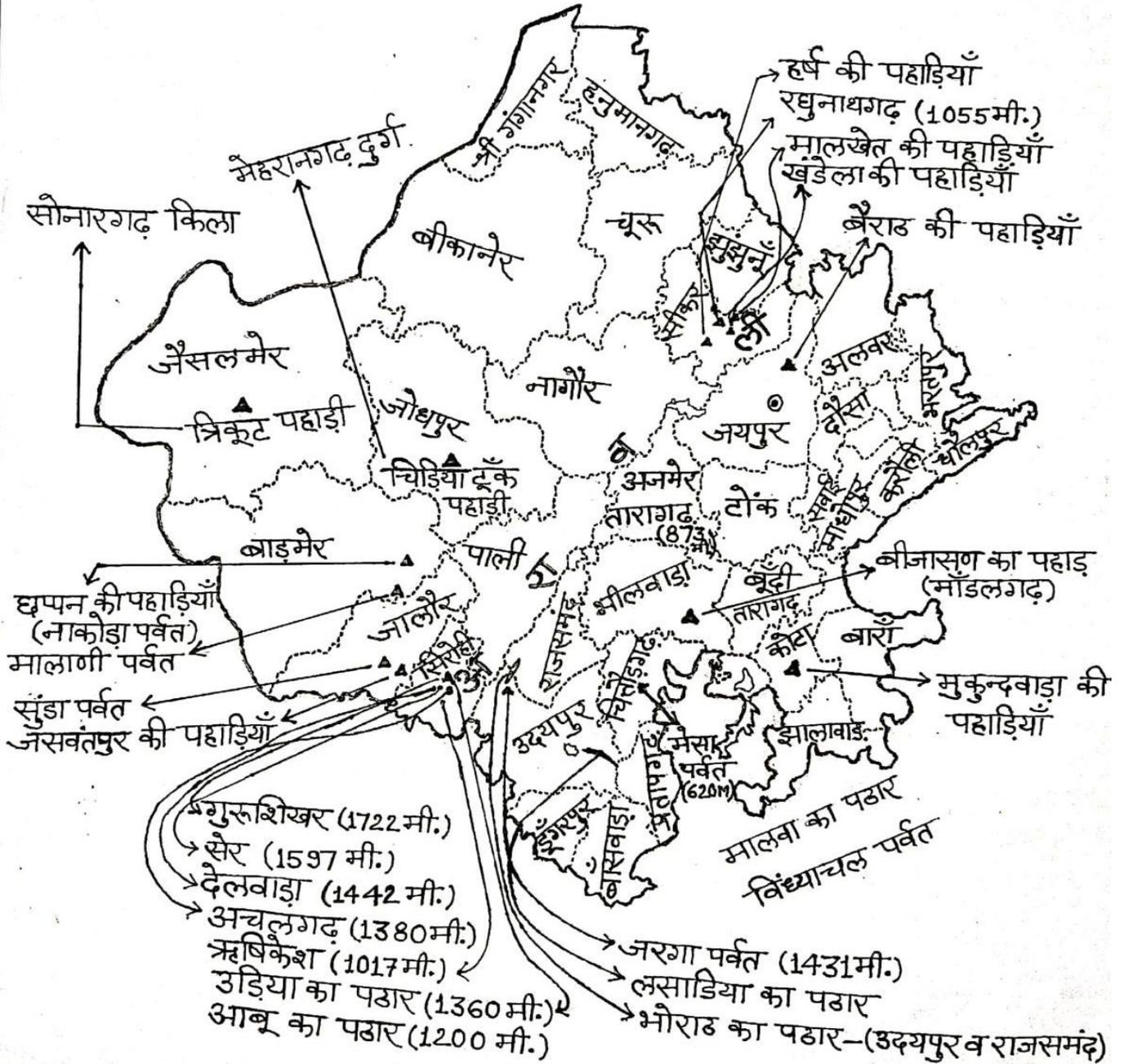
नोट - कर्नल जेम्स टॉड ने काली खोह पर्वत श्रृंखला को मीणा जनजाति का आदिम स्थान बताया है, क्योंकि इस क्षेत्र में मीणा जनजाति अधिकांश मात्रा में निवास करती हैं।

राज्य की प्रमुख पर्वत चोटियां -

पर्वत चोटियों के नाम	जिला
गुरु शिखर पर्वत चोटी	सिरोही (1722 मीटर)
सेर पर्वत चोटी	सिरोही (1597 मीटर)
दिलवाड़ा पर्वत चोटी	सिरोही (1442 मीटर)
जरगा चोटी	उदयपुर (1431 मीटर)
जेलिया डूंगर	उदयपुर
धोलिया डूंगर	उदयपुर
सिरार पहाड़ी	उदयपुर
कामन मंगरा चोटी	उदयपुर
मंगरा	उदयपुर
दूसा निया	उदयपुर
सज्जन गढ़	उदयपुर
नाग फनी	उदयपुर
मनगांव पहाड़ी	सिरोही
ऋषिकेश चोटी	सिरोही
संम्बारीया पर्वत चोटी	सिरोही
अचलगढ़ पर्वत श्रृंखला	सिरोही
लोहा र्गल पर्वत चोटी	झुंझुनू

भोजगार पर्वत चोटी	झुंझुनू
अध-वादा पर्वत चोटी	झुंझुनू
हर्ष पहाड़ी	सीकर
कमल नाथ पर्वत चोटी	सीकर
मालखेत की पहाड़ियां	सीकर
रघुनाथ गढ़ पहाड़ियां	सीकर
कुंभलगढ़ पहाड़ियां	राजसमंद
बैराज चोटी	अलवर
खोह पहाड़ी	जयपुर
बैराट पहाड़ी	जयपुर
बिलाली पहाड़ी	जयपुर
तारागढ़ पहाड़ी	अजमेर
टाडगढ़ पहाड़	अजमेर
बाबाई पहाड़ी	जयपुर

राजस्थान के प्रमुख पर्वत एवं पठार



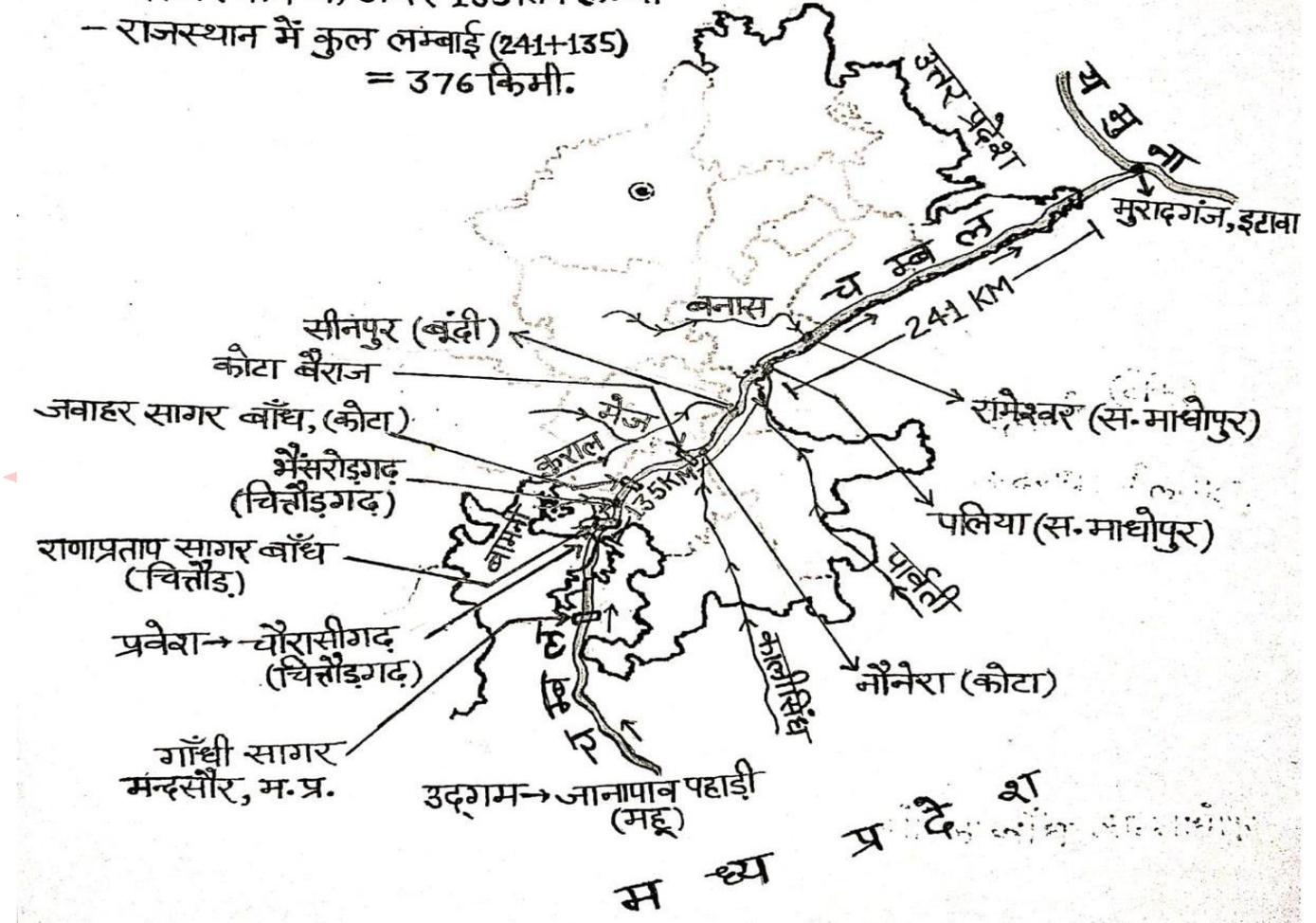
(ग) पूर्वी मैदानी भाग

प्रिय पाठकों अब हम पढ़ेंगे पूर्वी मैदानी भाग के बारे में। जैसा कि आपको पता है राजस्थान में स्थित अरावली पर्वतमाला के पूर्व में नदियों के प्रवाह वाला क्षेत्र है। जब नदियां एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तो अपने साथ मिट्टी, कंकड़

पत्थर, इत्यादि लेकर जाती हैं और धीमी प्रभाव वाले क्षेत्र में जमा कर देते हैं और इसी प्रकार इन सभी से मैदानी क्षेत्र का निर्माण होता है। इसी प्रकार अरावली के पूर्व में नदियों के प्रवाह के द्वारा लाई गई मिट्टी से निर्मित मैदानी भाग को "पूर्वी मैदानी भाग" के नाम से जाना जाता है इसलिए इस क्षेत्र में दोमट

चम्बल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ

- राजस्थान की कामधेनु
- प्राचीन नाम - चर्मणवती
- कुल लम्बाई लगभग 965 किमी.
- राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर 241 KM लम्बी
- राजस्थान के अन्दर 135 KM लम्बी
- राजस्थान में कुल लम्बाई (241+135)
= 376 किमी.



- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम हैं, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।
- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 241 किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिले हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मन्दासौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।

रेवा नदी :-

यह नदी मध्यप्रदेश राज्य के भानपुरा तहसील की पहाड़ियों से निकलती है और पश्चिम में प्रवाहित होती हुई बुद्ध नगर के निकट झालावाड़ जिले के पचपहाड़ तहसील में प्रवेश करती है। अंत में यह नदी भीलवाड़ा गांव के निकट आहू से मिल जाती है।

गुजाली :-

यह एक सहायक नदी है जो चंबल में मिल जाती है। इसका उद्गम मध्यप्रदेश में जाट गांव के पास से है। दौलतपुर गांव के निकट के चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवेश करती है और पूर्व की ओर बहती है। चित्तौड़गढ़ जिले में यह मोरेन, अमरगंज व कुआँ खेड़ा गांव से होकर निकलती है। अंततः अरनिया गांव के पास यह चंबल नदी में मिल जाती है।

चंद्रभागा नदी :-

यह छोटी नदी है जो सेमली नामक गांव के निकट से निकलती है। इसके पश्चात् यह झालरापाटन तहसील में केवल 7 किलोमीटर तक प्रवाहित होती है और खाड़ीयाँ गांव के निकट कालीसिंध में मिल जाती है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर झालरापाटन कस्बे के निकट चंद्रावती नामक स्थान पर स्नान के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित होते हैं।

2. अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

1. लूनी नदी -

- इस नदी का उद्गम स्थल अजमेर जिले में स्थित नाग पहाड़ी है। पुष्कर से गोविंदगढ़ (अजमेर) तक इसे साक्री के नाम से जाना जाता है। अजमेर में इसे साबरमती, सागरमती, या सरस्वती कहा जाता है, आगे चल कर इसे लूनी नदी के नाम से जाना जाता है।
- यह अरावली के पश्चिम में बहने वाली लूनी नदी सबसे बड़ी नदी है लूनी नदी मरुस्थल की सबसे लंबी नदी भी है।
- इसे अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे - मारवाड़ की जीवनरेखा, मरुस्थल की गंगा, आधी खारी आधी मीठी नदी, अंतः सलिला (जो कि कालिदास ने दिया था), रेल या नेड़ा (जालौर में जाना जाता है)
- इस नदी की कुल लंबाई 320 किलो मीटर है जो कि पूर्णतया बरसाती नदी है। इसका जल बालोतरा (बाड़मेर) तक मीठा तथा बाद में खारा हो जाता है

इसलिए इसे आधी मीठी आधी खारी नदी के नाम से जाना जाता है।

- इसकी सहायक नदियां निम्न प्रकार हैं - सुकड़ी, जवाई, सगाई, लीलड़ी, जोजड़ी, मीठड़ी, सागी इत्यादि
- इसका अपवाह अजमेर, नागौर, पाली, जौधपुर, बाड़मेर और जालौर जिले में लूनी नदी के तेज प्रवाह के कारण इसे रेल या नेड़ा कहा जाता है।
- हल्दीघाटी के युद्ध की योजना अकबर ने इसी नदी के तट पर बनाई थी।
- लूनी एवं बनास राज्य की ऐसी नदियां हैं जो अरावली पर्वतमाला को मध्य में से विभाजित करती हैं।
- लूनी नदी से जौधपुर की जयसमंद झील को पानी की आपूर्ति होती है।
- लूनी नदी में दाईं ओर से केवल जोजड़ी नदी मिलती है इसका उद्गम नागौर के पोंडरु गांव की पहाड़ियों से होता है।
- यह नदी अंत में जालौर में बह कर गुजरात के कच्छ जिले में प्रवेश करती है और फिर कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती है।

2. माही नदी

- इस नदी को दक्षिण की गंगा, कांठल की गंगा बांगड़ की गंगा, आदिवासियों की गंगा, दक्षिण राजस्थान की जीवन रेखा या स्वर्ण रेखा आदिवासियों की जीवन रेखा कहा जाता है।
- इस नदी का उद्गम विंध्याचल पर्वतमाला के मध्यप्रदेश के धार जिले के सरदारपुरा नामक गांव की अमरोरु की पहाड़ियों में स्थित "मेहद झील" से होता है।
- यह राजस्थान में बाँसवाड़ा के खान्दू नामक स्थान के पास प्रवेश करती है तथा बाँसवाड़ा - डूंगरपुर की सीमा बनाती हुई गुजरात में पंचमहल जिले में रामपुर के पास प्रवेश करती है।
- माही नदी पर कड़ाना बांध स्थित है। यह नदी आगे चल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है।
- इसके प्रवाह क्षेत्र को "छप्पन का मैदान" भी कहा जाता है इस नदी की कुल लंबाई 576 किलोमीटर है तथा केवल राजस्थान में यह 171 किलोमीटर लंबी है।
- डूंगरपुर जिले में बेषेश्वर के निकट माही नदी, सोम नदी एवं जाखम नदी का संगम है जिसे त्रिवेणी संगम कहा जाता है इसी पर प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को मेला लगता है जिसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है इसी स्थान पर संतमावजी द्वारा स्थापित किया गया

अध्याय - 8

जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, और लिंगानुपात

2021 की अनुमानित जनसंख्या

2020 में राजस्थान की अनुमानित जनसंख्या	79,502,477
2021 में पुरुषों की अनुमानित जनसंख्या	41,235,725
2021 में महिलाओं की अनुमानित जनसंख्या	38,266,753

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

2011 में राजस्थान की कुल आबादी	68,548,437
पुरुषों की जनसंख्या	35,554,169
महिलाओं की जनसंख्या	32,994,268
भारत की जनसंख्या (प्र.)	5.66%
लिंगानुपात	928
बच्चों का लिंगानुपात	888
घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	200
घनत्व (मील प्रति वर्ग)	519
क्षेत्र (प्रति वर्ग कि.मी.)	342,239
क्षेत्र (मील प्रति वर्ग)	132,139
बच्चों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	10,649,504
लड़कों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	5,639,176
लड़कियों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	5,010,328
साक्षरता	66.11%
साक्षरता पुरुष (प्र.)	79.19%
साक्षरता महिलाएं (प्र.)	52.13%
कुल साक्षर	38,275,282

4. अलवर	438
5. धौलपुर	398

न्यूनतम जनघनत्व वाले 5 जिले

जैसलमेर	17
बीकानेर	78
बाड़मेर	92
चूरू	147
जोधपुर	161

लिंगानुपात (प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या = 928)

- शहरी लिंगानुपात 914
- ग्रामीण लिंगानुपात 933

सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला : इंगूरपुर (994 महिला / 1000 पुरुष)

सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला : धौलपुर (846 महिला / 1000 पुरुष)

सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 5 जिले

इंगूरपुर	994
राजसमंद	990
पाली	987
प्रतापगढ़	983
बाँसवाड़ा	980

न्यूनतम लिंगानुपात वाले 5 जिले

धौलपुर	846
जैसलमेर	852
करौली	861
भरतपुर	880
गंगानगर	887

सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला (ग्रामीण क्षेत्र में) पाली (1003 महिला / 1000 पुरुष)

सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला (ग्रामीण क्षेत्र में) धौलपुर (841 महिला / 1000 पुरुष)

सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला (शहरी क्षेत्र में) टोंक (985 महिला / 1000 पुरुष)

• राजस्थान की जनजातियाँ

सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिले के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बड़े गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटे बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है।
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : 11 गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : 84 गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबादो के वाल्मिकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरुष मानते हैं।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
- होली के अवसर पर लट्टुमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से लेंगी खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते हैं।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती हैं परंतु पुरुषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वेंसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।
- **अर्थव्यवस्था** : सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते हैं। कृषि कार्यों में 45 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत

कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा का विकास हो रहा है। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की. संकल्प संस्था, अच्छा कार्य कर रही है।

कंजर :-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते हैं, जिसे 'पातो मांगना' कहते हैं।
- जोगणिया माता (चित्तौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सर्वाई माधोपुर)
- रक्त दंजी माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते हैं।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते हैं।
- मोर का मांस खाते हैं।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते हैं, जिसे 'खूसनी' कहते हैं।

अर्थव्यवस्था -

कुछ लोग ठेला, टेम्पू चलाते हैं। ईश्वर का आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं। इसे पाती मांगना कहते हैं।

कथौड़ी :-

- उदयपुर जिले में अधिक संख्या में।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के हैं।
- खैर के वृक्ष से कथा बनाते हैं इसलिए कथौड़ी कहते हैं।
- कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
- कथौड़ी शराब पीते हैं एवं महिलाएँ भी पुरुषों के बराबर बैठकर पीती हैं।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती हैं।
- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी 'फड़का' कहलाती है।
- इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- **प्रमुख कविता** : इंगर देव, वाघ देव, भारी माता, कंसारी माता।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।

नोट - प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1 st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें -

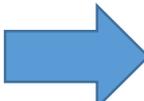
RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s>

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें 	https://wa.link/kxkr5q

अध्याय - 12

ऊर्जा संसाधन

राजस्थान में ऊर्जा विकास

ऊर्जा

- अधिष्ठापित क्षमता (31 दिसम्बर, 2021 की स्थिति में) 23.321.40 मेगावाट

सौर ऊर्जा

- क्षमता: 142 गीगावाट
- अधिष्ठापित क्षमता (दिसम्बर, 2021 तक) 9,228.70 मेगावाट

पवन ऊर्जा

- क्षमता 1,27,750 मेगावाट
- अधिष्ठापित क्षमता (दिसम्बर, 2021 तक) 4,338 मेगावाट

बायोमास ऊर्जा

- अधिष्ठापित क्षमता (दिसम्बर, 2021 तक) 120.45 मेगावाट

सड़क

- कुल सड़कों की लम्बाई (मार्च, 2021 तक) 2,72,959.28 कि.मी.
- सड़क घनत्व 79.76 कि.मी. / 100 वर्ग कि.मी.

महिलाओं के लिए निःशुल्क यात्रा सुविधा (वर्ष 2021-22 दिसम्बर, 2021 तक)

- महिला दिवस पर 7,17,475 महिलाएं
- रक्षाबन्धन पर 7,45,792 महिलाएं

परिवहन एवं संचार

- कुल वाहन पंजीकरण (वर्ष 2021-22 दिसम्बर, 2021 तक) : 7,83,865
- रेलमार्गों की कुल लम्बाई (मार्च, 2020 तक) 5,998 कि.मी.
- टेलीकॉम उपभोक्ताओं की संख्या (मार्च, 2021 तक) : 6.68 करोड़

आपदा प्रबन्धन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा

- राहत कार्यों के लिए आवंटित राशि (वर्ष 2021-22 दिसम्बर, 2021 तक) ₹1,419.42 करोड़

औद्योगिक क्षेत्र

- प्रचलित मूल्यों पर योगदान: 24.67%
- स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वृद्धि दर 15.37%

खनन क्षेत्र

- प्रचलित मूल्यों पर योगदान: 2.78%
- स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वृद्धि दर 8.15%

विनिर्माण क्षेत्र

- प्रचलित मूल्यों पर योगदान: 10.06%
- स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वृद्धि दर 23.75%

निर्माण क्षेत्र

- प्रचलित मूल्यों पर योगदान: 8.68%
- स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वृद्धि दर 7.87%

विद्युत, गैस, जल एवं अन्य उपचारात्मक सेवाएँ

- प्रचलित मूल्यों पर योगदान: 3.15%
- स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वृद्धि दर 6.81%

भारत में कच्चे तेल के उत्पादन में राज्य

- द्वितीय सबसे बड़ा उत्पादक
- राजस्थान में देश के कुल उत्पादन का 20%

प्रमुख खनिज

- खनन किये गये खनिजों की संख्या- 57
- प्रमुख खनिजों के लिये जारी किये गये खनन पट्टों की संख्या - 174

एकमात्र / अग्रणी उत्पादक

सीसा और जस्ता अयस्क. सेलेनाइट, बोलेस्टोनाइट, सिल्वर, केलेसाइट, जिप्सम, बाल क्ले, फॉस्फाराइट, गेरु, स्टेटाइट, फेल्सपार, फायर क्ले, मार्बल, सेण्डस्टोन, ग्रेनाइट आदि।

राज्य से सर्वाधिक निर्यातित 5 वस्तुएँ एवं प्रतिशत अंश (2020-21)

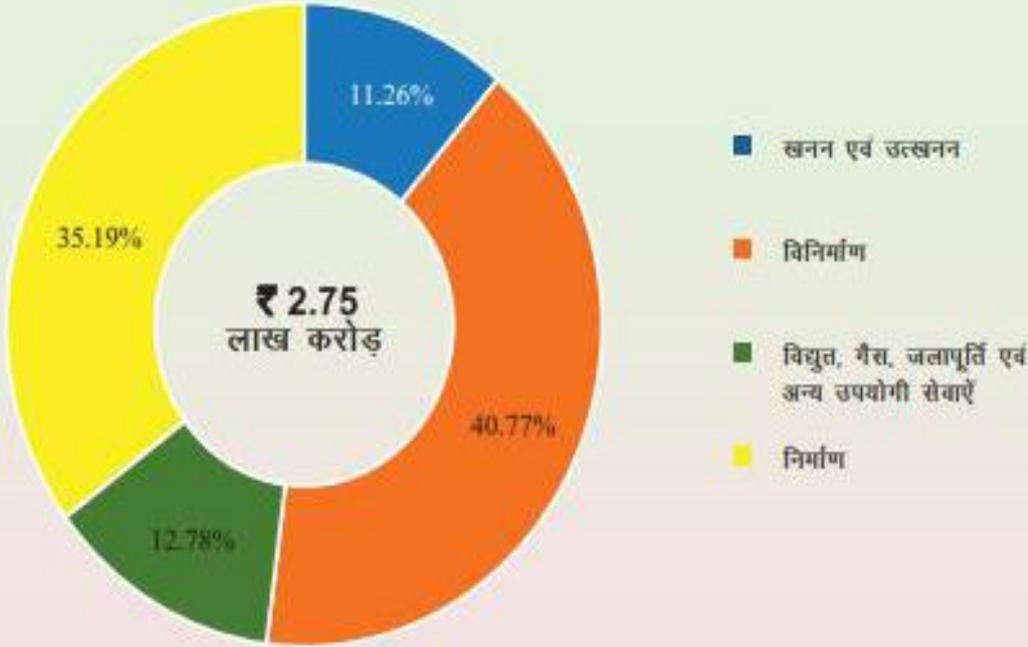
- अभियांत्रिकी वस्तुएं (14.75%)

- हस्तकला (11.76%)
- कपड़ा (10.86%)
- धातु (11.01%)
- रासायनिक एवं सम्बद्ध (9.51%)

एमएसएमई (2021-22)

- पंजीकृत औद्योगिक इकाईयां: 2,02,947
- प्रत्यक्ष रोजगार के सृजित अवसर: 11,28,082 व्यक्ति

औद्योगिक क्षेत्र के उपक्षेत्रों का प्रचलित मूल्यों पर वर्ष 2021-22 (अग्रिम अनुमान) में योगदान



तालिका-4.1 राजस्थान का औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12)

क्षेत्र	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22*
विनिर्माण	134.71	143.39	125.93	122.95	133.91
खनन	132.85	134.76	125.60	119.26%	123.71
विद्युत	124.96	137.70	135.15	126.10	135.77
सामान्य सूचकांक	133.08	140.37	126.90	122.34	131.33

*दिसम्बर, 2021 तक (प्रावधानिक)

- बिजली संसाधनों का विकास किसी भी क्षेत्र के लिए आवश्यक है। राजस्थान के बिजली संसाधन आधुनिक कृषि, औद्योगिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक हैं। पश्चिम राजस्थान में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस संसाधनों की खोज और सौर ऊर्जा

क्षमता ने राजस्थान को एक शक्ति अधिशेष राज्य में परिवर्तित करने की नई उम्मीदें हैं।

- भारत की स्वतंत्रता के समय, शहरों और गांवों की कुल (राजस्थान में) विद्युतीकृत संख्या 42 से अधिक नहीं थी और स्थापित उत्पादन क्षमता केवल 13.27 मेगावाट थी। हालाँकि, 1 जुलाई 1957 को राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB) के गठन के साथ, राजस्थान में बिजली क्षेत्र को प्राथमिकता

मिली और पूरे राज्य में बिजली परियोजनाएँ शुरू हुईं।

- राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB) राज्य में बिजली उत्पादन, हस्तांतरण और वितरण के लिए प्रमुख एजेंसी थी।
- लेकिन 19 जुलाई 2000 के बाद, बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और उत्पादन, हस्तांतरण और वितरण कार्यों को अलग करने के लिए आरएसईबी को 5 अलग-अलग कंपनियों में पुनर्गठित किया गया है।
- 19 जुलाई 2000 को राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल (RSEB) को भंग करके निम्न पाँच कंपनियों में बाँट दिया गया है।

- राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, जयपुर
- राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड, जयपुर
- जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जयपुर
- अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, अजमेर
- जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जोधपुर

राजस्थान विद्युत नियामक प्राधिकरण (RERA)

स्थापना 2 जनवरी, 2000

मुख्यालय जयपुर

कार्य

- राजस्थान में विद्युत कंपनियों को लाइसेंस देना।
 - विद्युत कंपनियों का नियमन और नियंत्रण करना।
 - कंपनियों की दर तय करना।
- 7.34 प्रतिशत की वृद्धि के साथ उपभोक्ताओं की संख्या 145.61 लाख (मार्च-2018) से बढ़कर 156.30 लाख (मार्च 2019) हो गई है।
 - जहाँ तक ग्रामीण परिवारों के विद्युतीकरण का संबंध है, 93.88 लाख घरों में से 92.14 लाख घरों का विद्युतीकरण किया जा चुका है।
 - भरतपुर, बीकानेर और कोटा में निजी बिजली वितरण कंपनी है। 2015 में, राजस्थान सरकार ने राज्य विद्युत क्षेत्र वितरण कंपनियों के लिए पावर ट्रेडिंग व्यवसाय

करने के लिए राजस्थान ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड (RUVNL) की स्थापना की।

विद्युत उत्पादन के स्रोत का वर्गीकरण

1. परंपरागत संसाधन

परंपरागत ऊर्जा संसाधन वे होते हैं जिनका पूर्ण उपयोग किया जा सकता है। इनको एक बार उपयोग में लेने के बाद पुनः प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है उदाहरण कोयला, पेट्रोलियम। - -

2. गैर-परंपरागत संसाधन

ऊर्जा के ऐसे संसाधन जिनका कम समय में ही पुनः नवीनीकरण कर सकते हैं उदाहरण हवा, जल, सौर ऊर्जा

राजस्थान के सर्वाधिक ऊर्जा प्राप्ति वाले स्रोत

- ताप विद्युत
- जल विद्युत

राजस्थान में सर्वाधिक ऊर्जा की संभावना वाला स्रोत

- सौर ऊर्जा
- पवन ऊर्जा
- बायो गैस ऊर्जा

- राजस्थान में दूसरा परमाणु ऊर्जा संयंत्र नापला (बाँसवाड़ा में निर्माणधीन 700*2-1400 मेगावाट)। राजस्थान में नेफ्था एवं गैस पर आधारित विद्युत संयंत्र धौलपुर (110*3 330 मेगावाट)।
- राजस्थान में प्राकृतिक गैस पर आधारित प्रथम विद्युत संयंत्र रामगढ़ (जैसलमेर)।
- राजस्थान में प्रथम बायो गैस आधारित विद्युत संयंत्र पदमपुर (श्रीगंगानगर)।

• परम्परागत ऊर्जा स्रोत

- आधुनिक शक्ति के संसाधनों में कोयला, पेट्रोल, जल विद्युत मुख्य हैं। राजस्थान इन तीनों ही शक्ति संसाधनों में अभाव वाला राज्य माना जाता है।
- राजस्थान में प्रति व्यक्ति विद्युत की खपत भारत के अन्य प्रांतों की अपेक्षा कम है और उसका स्थान 8वाँ है।
- परंतु जैसे-जैसे अधिक उद्योग स्थापित किये जा रहे हैं, खेती में आधुनिकीकरण बढ़ रहे हैं वैसे-वैसे उनमें विद्युत की खपत भी बढ़ रही है।
- अतः ऊर्जा की विकट समस्या को ध्यान में रखते हुए ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की खोज जरूरी हो गई।

पुरस्कार 2017-18 की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

- सरकारी भवनों की श्रेणी में ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2019 का प्रथम श्रेणी पुरस्कार उत्तर-पश्चिमी रेलवे मुख्यालय भवन को प्रदान किया गया।
- रेलवे स्टेशन श्रेणी में ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2019 का जोधपुर रेलवे स्टेशन को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया।

अध्याय - 13

पंचायती राज

- पंचायतीराज भारतीय संविधान के भाग -4 (नीति - निर्देशक तत्व) के अनुच्छेद 40 में ग्राम पंचायत (पंचायतीराज) की व्यवस्था की गई है ।
- प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर , 1952 को ' सामुदायिक विकास कार्यक्रम ' चलाया गया फोर्ड फाउण्डेशन के सहयोग से लेकिन सरकारी मशीनरी (नौकरशाहों) के अत्यधिक हस्तक्षेप व जनसहभागिता की कमी के कारण यह कार्यक्रम असफल रहा । 2 अक्टूबर , 1953 को ' राष्ट्रीय प्रसार सेवा कार्यक्रम ' चलाया गया । इन दोनों कार्यक्रमों का उद्देश्य - ग्रामीण विकास था लेकिन यह कार्यक्रम असफल रहे ।
- 'पंचायती राज' और 'नगरपालिका प्रणाली' को संवैधानिक अस्तित्व प्राप्त करने में एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा।
- वर्ष 1957 में ' सामुदायिक विकास कार्यक्रम ' व ' राष्ट्रीय प्रसार सेवा कार्यक्रम ' की असफलता की जाँच हेतु गठित समिति **बलवंत राय मेहता समिति** ने सर्वप्रथम पंचायती राज को स्थापित करने की सिफारिश की जिसे स्वीकार कर लिया गया साथ ही सभी राज्यों को इसे क्रियान्वित करने के लिए कहा गया।
- सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर (बगदरी गाँव) जिले में 2 अक्टूबर, 1959 को पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पंचायती राज की नींव रखी और उसी दिन इसे सम्पूर्ण राज्य (राजस्थान) में लागू कर दिया गया।
- किन्तु वाँछित सफलता प्राप्ति में कमी ने इस पर गम्भीरता से विचार करने के लिए मजबूर किया। अनेक समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने अपनी सिफारिशों से पंचायती राज को मजबूती प्रदान की।

क्र.सं.	वर्ष	समिति का नाम	प्रमुख सिफारिशें
1.	1957	बलवंत राय मेहता	<ul style="list-style-type: none"> लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की सिफारिश की । पंचायतीराज का ढाँचा त्रिस्तरीय होना चाहिए । i.जिला स्तर पर - जिला परिषद

			<p>ii. ब्लॉक (खण्ड) स्तर पर - पंचायत समिति</p> <p>iii. ग्राम स्तर पर (सबसे निचला स्तर) - ग्राम पंचायत</p> <ul style="list-style-type: none"> जिला परिषद का अध्यक्ष , जिला कलेक्टर को बनाये जाने की सिफारिश की । इन्होंने मध्य / खण्ड स्तर को सर्वाधिक शक्तिशाली बनाने की सिफारिश की ।
2.	1977	अशोक मेहता	<ul style="list-style-type: none"> पंचायतीराज का ढाँचा द्विस्तरीय होना चाहिए । i. जिला स्तर जिला परिषद ii. मण्डल स्तर पर पंचायत समिति इस समिति ने ग्राम पंचायत (निम्न स्तर) को समाप्त करने की सिफारिश की । इस समिति ने जिला परिषद को शक्तिशाली बनाने की सिफारिश की । अनुसूचित जाति व जनजाति को जनसंख्या के आधार पर आरक्षण देने की सिफारिश की । दलगत प्रणाली के आधार पर पंचायतीराज के चुनाव कराने की सिफारिश की । पंचायतीराज संस्थाओं का कार्यकाल 4 वर्ष करने की सिफारिश । पंचायतीराज संस्थाओं के मामलों की देखरेख हेतु एक मंत्री की नियुक्ति की सिफारिश की । न्याय पंचायतों के गठन की सिफारिश की ।
3.	1985	जी.वी.के. राव समिति	<ul style="list-style-type: none"> पंचायतीराज का ढाँचा चार स्तरीय होना चाहिए :- i. राज्य स्तर पर - राज्य परिषद ii. जिला स्तर पर - जिला परिषद iii. खण्ड स्तर पर- पंचायत समिति iv. ग्राम स्तर पर - ग्राम पंचायत इस समिति ने खण्ड स्तर को सर्वाधिक शक्तिशाली बनाने की सिफारिश की । जिला स्तर पर जिला विकास आयुक्त के पद का सृजन करने की सिफारिश की । इस समिति ने अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति , पिछड़ा वर्ग व महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने की सिफारिश की । पंचायतीराज संस्थाओं के नियमित चुनाव कराये जाने की सिफारिश की । पंचायतीराज संस्थाओं का कार्यकाल 5 वर्ष करने की सिफारिश की । इस समिति ने पंचायतीराज संस्थाओं को ' बिना जड़ की घास ' कहा । इस समिति को ' कार्ड समिति ' के नाम से भी जाना जाता है ।
4.	1986	एल.एम. सिंघवी	<ul style="list-style-type: none"> पंचायतीराज का ढाँचा त्रिस्तरीय होना चाहिए ।

243 क (A)	ग्राम सभा
243 ख (B)	पंचायतों का गठन
243 ग (C)	पंचायतों की संरचना
243 घ (D)	स्थानों का आरक्षण
243 ङ (E)	पंचायतों की अवधि आदि
243 च (F)	सदस्यता के लिए निर्हताएं
243 छ (G)	पंचायतों की शक्तियां , प्राधिकार और उत्तरदायित्व
243 ज (H)	पंचायतों द्वारा कर अधिरोपित करने की शक्तियाँ
243 झ (I)	वित्तीय स्थिति के लिए वित्त आयोग का गठन
243 ञ (J)	पंचायतों के लेखाओं की संपरीक्षा
243 ट (K)	पंचायतों के लिए निर्वाचन
243 ठ (L)	संघ राज्यक्षेत्रों को लागू होना
243 ड (M)	इस भाग का कतिपय क्षेत्रों को लागू न होना
243 ढ (N)	विद्यमान विधियों और पंचायतों का बना रहना
243 ण (O)	निर्वाचन संबंधी मामलों में न्यायालयों के हस्तक्षेप का वर्जन

अनुच्छेद 243 इसमें ग्राम , ग्राम सभा , पंचायत , पंचायत क्षेत्र , मध्यवर्ती स्तर व जिला की परिभाषाएँ हैं । **ग्राम सभा** - मतदाता सूची में पंजीकृत ग्राम के सभी मतदाताओं से मिलकर ग्राम सभा बनती है । ग्राम सभा को अनुच्छेद 243 में परिभाषित किया गया है अर्थात् ग्राम सभा एक संवैधानिक इकाई है ।

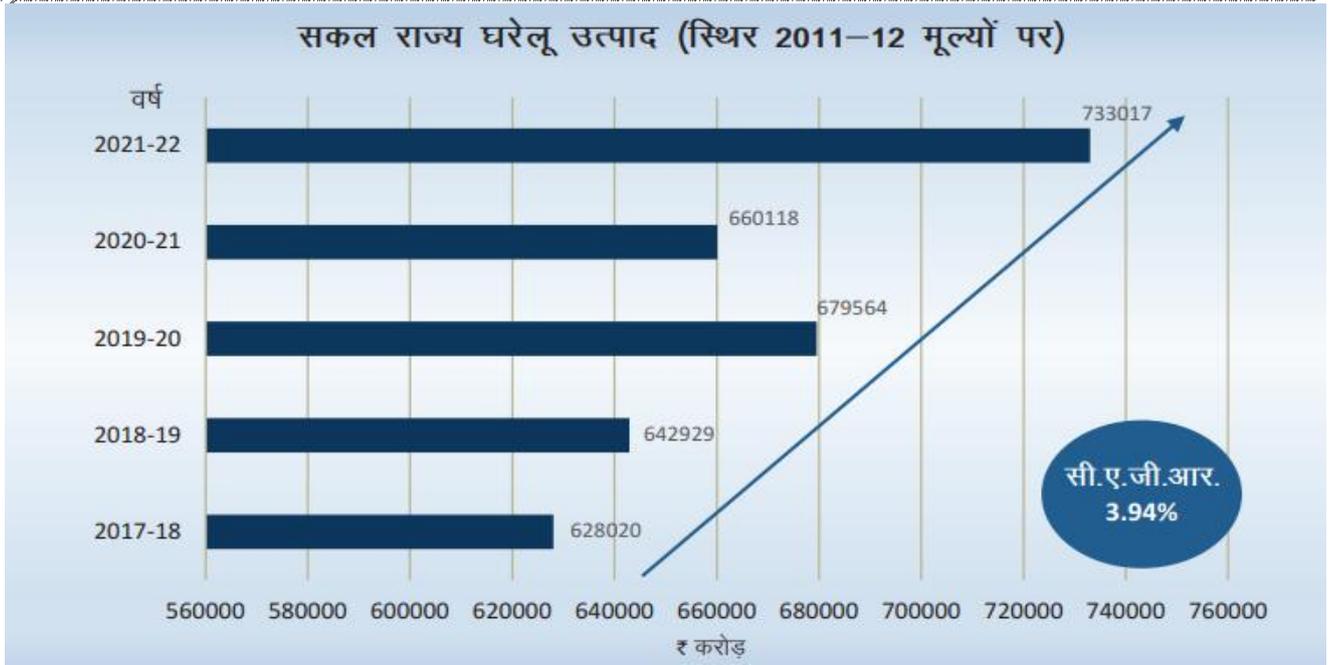
243 क (A) ग्राम सभा

- ग्राम सभा को पंचायतीराज का बुनियादी ढाँचा कहा जाता है । ग्राम सभा की बैठक सरपंच बुलाता है । सामान्यतः वर्ष में 4 बैठकें होती हैं (26 जनवरी , 1 मई , 15 अगस्त , 2 अक्टूबर) लेकिन वर्ष में कम से कम 2 बैठकें होनी आवश्यक हैं ।
- गणपति कुल सदस्यों का 1/10 होती है।
- ग्राम सभा की बैठकों की अध्यक्षता सरपंच करता है , सरपंच की अनुपस्थिति में उपसरपंच करता है । सरपंच व उपसरपंच दोनों की अनुपस्थिति में ग्राम सभा के सदस्यों में से कोई एक करता है ।
- ग्राम सभा की बैठकों की कार्यवाहियों का ब्यौरा ग्राम विकास अधिकारी (VDO) एक रजिस्टर में लिखेगा तथा सरपंच उस पर हस्ताक्षर करेगा ।
- संयुक्त बैठक - जब एक ही ग्राम पंचायत के दो गाँवों के मध्य सीमा विवाद , चारागाह को लेकर विवाद होते हैं तो संयुक्त बैठक बुलाई जाती है ।

- ग्राम सभा की संयुक्त बैठकों का प्रावधान राजस्थान पंचायतीराज नियम 2011 में किया गया है ।
- एक व्यक्ति एक से अधिक ग्राम पंचायतों की सूची में पंजीकृत नहीं हो सकता । ग्राम सभा की सदस्यता से संबंधित उत्पन्न विवाद का निर्णय सरपंच करता है ।
- व्यक्ति आजीवन ग्राम सभा का सदस्य रहता है । ग्राम सभा , राज्यसभा की तरह एक स्थायी संस्था है जिसे भंग नहीं किया जा सकता है ।

पंचायतों का गठन और संरचना

- अनुच्छेद 243 (b)** भारत में त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्था का प्रावधान करता है। प्रत्येक राज्य में ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती स्तर पर क्षेत्र पंचायत और जिलास्तर पर जिला पंचायत के गठन का प्रावधान है, किन्तु उस राज्य में जिसकी जनसंख्या 20 लाख से कम है, वहाँ मध्यवर्ती स्तर पर पंचायतों का गठन करना आवश्यक नहीं है। भारत में पश्चिम बंगाल ऐसा राज्य है, जहाँ चार स्तरीय पंचायत व्यवस्था अपनाई गई है। वहाँ पंचायतों के चार स्तर यथा ग्राम पंचायत, अंचल पंचायत, आंचलिक परिषद् और जिला परिषद् हैं।
- अनुच्छेद 243 (c)** में पंचायतों की संरचना के बारे में प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्य



शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एन.एस.डी.पी.)

सकल घरेलू उत्पाद समंको में से स्थाई पूंजीगत उपभोग को घटाकर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद का अनुमान प्राप्त किया जाता है। स्थाई पूंजी उपभोग, पूंजीगत स्कन्ध के उस हिस्से के प्रतिस्थापन मूल्य को मापता है, जिसका उपयोग वर्ष के दौरान उत्पादन प्रक्रिया में किया जाता है।

शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद प्रचलित मूल्यों पर

अग्रिम अनुमानों के अनुसार, प्रचलित मूल्यों पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद वर्ष 2021-22 में ₹10.79 लाख करोड़ रहने का अनुमान है, जो वर्ष 2020-21 में ₹9.14 लाख करोड़ था, यह वर्ष 2020-21 में 1.80 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में वर्ष 2021-22 में 18.01 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वर्ष 2021-22 के अग्रिम अनुमानों के अनुसार, शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वर्ष 2021-22 में ₹6.48 लाख करोड़ रहने का अनुमान है, जो वर्ष 2020-21 में ₹5.84 लाख करोड़ था। यह वर्ष 2020-21 में 2.49 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में वर्ष 2021-22 में 11.05 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। राजस्थान के शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद के अनुमान

दर्शाए

गाए

(₹ करोड़)

वर्ष	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22 (अ.)
प्रचलित कीमतों पर	748490	819340	898081	914262	1078903
वृद्धि दर (%)	9.65	9.47	9.61	1.80	18.01
स्थिर (2011-12) कीमतों पर	557618	568102	598550	583645	648142
वृद्धि दर (%)	5.28	1.88	5.36	-2.49	11.05

वर्ष 2019-20- संशोधित अनुमान- II, वर्ष 2020-21-संशोधित अनुमान- I और वर्ष 2021-22 अग्रिम अनुमान

प्रति व्यक्ति आय

प्रति व्यक्ति आय की गणना शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद को राज्य की मध्यवर्षीय कुल जनसंख्या से विभाजित कर प्राप्त की जाती है। प्रति व्यक्ति आय लोगों के जीवन स्तर एवं कल्याण का सूचक है।

प्रति व्यक्ति आय प्रचलित मूल्यों पर

अग्रिम अनुमानों के अनुसार प्रचलित मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2020-21 में 21.15.933 की तुलना में वर्ष 2021-22 में 1.35.218 अनुमानित है जो गत वर्ष 2020-21 की तुलना में वर्ष 2021-22 में 16.63 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

प्रति व्यक्ति आय स्थिर (2011-12) मूल्यों पर
अग्रिम अनुमानों के अनुसार स्थिर (2011-12) मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2020-21 में 174.009 की तुलना में वर्ष 2021-22 में ₹81.231 अनुमानित है, जो गत वर्ष 2020-21 की तुलना में वर्ष 2021-22 में 9.76 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है राजस्थान एवं अखिल भारत की प्रति व्यक्ति आय स्थिर (2011-12) कीमतों पर चित्र- में दर्शाई गई है।

राजस्थान बजट 2022-23 के प्रमुख बिंदु

राजस्थान के मुख्यमंत्री तथा राज्य वित्त मंत्री श्री अशोक गहलोत ने 23 फरवरी 2022 को विधान सभा में राजस्थान बजट 2022-23 प्रस्तुत किया। बजट 2022-23 में प्रदेश का प्रथम 'कृषि बजट' प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में राजस्थान बजट 2022-23 सारांश सम्मिलित किया गया है।

राजकोषीय संकेतक

- राजस्थान बजट 2022-23 के बजट अनुमानों में 12 लाख 14 हजार 977 करोड़ 23 लाख की राजस्व प्राप्तियां
- राजस्थान बजट 2022-23 के बजट अनुमानों में ₹2 लाख 38 हजार 465 करोड़ 79 लाख का राजस्व व्यय
- राजस्थान बजट 2022-23 के बजट अनुमानों में राजस्व घाटा ₹23 हजार 488 करोड़ 56 लाख
- राजस्थान बजट 2022-23 का राजकोषीय घाटा ₹ 58 हजार 211 करोड़ 55 लाख जो GSDP का 4.36 प्रतिशत

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं

- चिरंजीवी योजना में प्रति परिवार 10 लाख रुपये का सालाना चिकित्सा बीमा
- चिरंजीवी योजना में Cochlear Implant, Bone-marrow Transplant, Organ Transplant, Blood/Platelets/Plasma Transfusions, Limb Prosthesis (Bone Cancer) का भी निशुल्क इलाज।
- सभी श्रेणी के राजकीय चिकित्सा संस्थानों में उपलब्ध Outdoor (OPD) एवं Indoor (IPD) सुविधाएं समस्त प्रदेशवासियों के लिए पूर्णतः निशुल्क।
- मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना लागू, बीमित परिवार को 5 लाख रुपये तक का निशुल्क दुर्घटना बीमा कवर
- एक हजार 224 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 15 चिकित्सालयों का निर्माण

नोट - प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1 st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें -

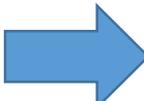
RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s>

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें 	https://wa.link/kxkr5q

“राजस्थान RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - 2nd, कनिष्ठ सहायक)”

भाग - 1 हिंदी + अंग्रेजी

भाग - 2 गणित एवं विज्ञान

भाग - 3 भारत एवं राजस्थान का भूगोल + अर्थव्यवस्था + पंचायती राज

भाग - 4 इतिहास + संस्कृति (राजस्थान)

इन नोट्स में “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - II, कनिष्ठ सहायक)” भर्ती परीक्षा का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है, जो लगभग 1200 पेज में और चार भागों में समाप्त किया गया है। इनको छात्रों को पढ़ने में सिर्फ दो से ढाई माह का समय लगेगा।

नोट्स की विशेषताएं -

इन नोट्स में क्या क्या शामिल है -

- 1) “RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड - 2nd, कनिष्ठ सहायक)” का कम्पलीट सिलेबस (पाठ्यक्रम) शामिल किया गया है जो चार भागों में तैयार किया गया है। सिलेबस के अलावा उसी से जुड़ी हुई ऐसी जानकारी जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है
- 2) पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों का विश्लेषण करके जो टॉपिक अधिक महत्वपूर्ण लगे हैं उन पर अधिक ध्यान दिया गया है

- 3) सभी नोट्स HANDWRITTEN हैं जो नवीनतम रूप से तैयार किये गये हैं , साफ - साफ लेखन कार्य किया गया है
- 4) हमने इन नोट्स में TRICKS डाली हैं , जिससे फैंक्ट्स को आसानी से याद किया जा सके
- 5) सिर्फ उतनी ही जानकारी को शामिल किया गया है , जो परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अनावश्यक जानकारी को हटा दिया गया है
- 6) रिवीजन के लिए अंत में शोर्ट में वनलाइनर रिवीजन तथ्य भी दिए गये हैं

ये नोट्स निम्नलिखित लोगों के द्वारा तैयार किये गये हैं -

- 1) राजस्थान की प्रमुख एवं दिल्ली की प्रसिद्ध , प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों की BEST FACULTIES द्वारा तैयार किये गये हैं , जो अपने अपने विषयों में निपुण हैं तथा जिन्हें **“RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड -2nd, कनिष्ठ सहायक)”** का कोर्स पढ़ाने का काफी अनुभव है
- 2) कुछ टॉपर्स से हमारा टाई अप है जो फ़िलहाल नौकरी कर रहे हैं लेकिन आप लोगों को आगे बढ़ाने के लिए वो हमने अपने इनपुट्स देते हैं और हमने उनको इन नोट्स में शामिल लिया है
- 3) इसके अलावा INFUSION NOTES की अपनी एक अलग टीम है जिसमें सभी अपने अपने विषयों के एक्सपर्ट्स हैं , वो लोग इनको रिव्यू करके अंतिम रूप से तैयार करते हैं

ये नोट्स आपकी सफलता में कैसे मदद करेंगे -

1. नोट्स को एक्सपर्ट टीम ने तैयार किया है , जो कोचिंग संस्थानों पर पढ़ाते हैं , इसलिए नोट्स की भाषा इतनी सरल है की कोई भी तथ्य एक बार पढ़ने से समझ में आ जाएगा / नोट्स को खुद से ही आसानी से समझा जा सकता है

इसलिए कोचिंग करने की कोई आवश्यकता नहीं है , इससे हजारों रुपये की कोचिंग फीस बचेगी /

2. सारा मटेरियल सिलेबस और पिछले वर्षों में आये हुए प्रश्नों के आधार पर तैयार किया गया है तो अनावश्यक डाटा को पढने से बचेंगे साथ ही कम से कम समय में पूरा पाठ्यक्रम समाप्त हो जाएगा ,
3. इसके आलावा हमारे एक्सपर्ट्स आपको समय - समय पर बताते रहेंगे की तैयारी कैसे - कैसे करनी है
4. इन नोट्स को कुछ इस तरह से भी तैयार किया गया है , की यदि किसी कारणवश छात्र का एग्जाम नहीं निकलता है तो उसमे जो जानकारी दी गयी वो किसी अन्य परीक्षा में भी काम आ सकती है , अर्थात् छात्र इनको पढ़कर किसी अन्य एग्जाम में भी APPEAR हो सकता है /
5. इन नोट्स को इस तरह से तैयार किया गया है कि इनको सभी तरह के छात्र आसानी से पढ़ सकते हैं , जैसे कमजोर छात्र , मीडियम छात्र , एक्सपर्ट्स छात्र /